IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कालिदास एवं शेक्सपीयर के नारी पात्रः नाटकों के विशेष संदर्भ में

डॉ. अपर्णा.यू.नायर,
असिस्टेंट प्रोफसर,
हिन्दी विभाग, सेंट सेवियेस् कॉलेज , वैक्कम

विश्व के माने हुए नाटककार कालिदास एवं शेक्सपीयर ने अपने नाटकों में भी नारी के अन्तः एवं बाह्य पक्षों का सूक्ष्म विवेचन किया है। दोनों ही नाटककारों ने नारी के नैतिक आचरण पर बल दिया है। नारी के विषय में दोनों में अनेक समानताएँ हैं।

कालिदास भारतीय संस्कृति के उन्नायक है। उन्होंने तीन नाटक लिखे - 'मालविकाग्निमित्रम्', 'विक्रमोर्वशीयम्' और 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'। शेक्सपीयर ने विश्व साहित्य को 37 नाटक प्रदान किए हैं। वे हैं - 'द टेम्पेस्ट', 'द टू जेन्टलमेन ऑफ वेरोना', 'मेरी वाइट्ज़ ऑफ विन्डसर', 'मेजर फॉर मेजर', 'द कोमडी ऑफ एरर्स', 'मच एडो एबाउट नथिंग', 'लब्स लेबर्स लास्ट', 'ए मिड्समर नाइट्स ड्रीम', 'द मर्चेण्ट ऑफ वेनिस', 'एज़ यू लाइक इट', 'द टेमिंग अफ द श्रू', 'आल्ज वैल दैट एन्ड्ज वैल', 'ट्वेल्फथ नाइट', 'द विन्टर्स टेल', 'द लाइफ एण्ड डैथ ऑफ किंग जान', 'द ट्रेजडी ऑफ किंग रिचर्ड द सेकेण्ड', 'द फर्स्ट पॉर्ट ऑफ किंग हेनरी फोर्थ', 'द सेकेंड पार्ट ऑफ किंग हेनरी फोर्थ', 'द लाइफ ऑफ किंग हेनरी फिफ्थ', 'द फर्स्ट पार्ट ऑफ किंग हेनरी सिक्स्थ', 'द सेकेंट पार्ट ऑफ किंग हेनरी सिक्स्थ', 'द ट्रेजडी ऑफ किंग रिचर्ड थर्ड', 'द फेमस हिस्टरी ऑफ द लाईफ ऑफ किंग हेनरी एट्थ', 'ट्रायलस एण्ड क्रेसिडा', 'कॉरियोलोनस', 'टीटस एन्ड्रोनिकस', 'रोमियो एण्ड जूलियट', 'टिमन ऑफ एंथेस', 'जूलियस सीज़र', 'मैकबेथ', 'हैमलेट - प्रिंस ऑफ डेनर्माक', 'किंग लीयर', 'ऑथेलो - दि मूर ऑफ वेनिस', 'एण्टोनी एण्ड क्लियोपेट्रा', 'सिम्बेलीन', और 'पेरिक्लीज़ - प्रिंस ऑफ टायर।' जिनमें 'पेरिक्लिज' को कुछ लोग शेक्सपीयर की कृति नहीं मानते हैं। क्योंकि 1623 में शेक्सपीयर का

जो फोलियां वालूम प्रकाशित किया गया उसमें 'पेरिक्लीज़' नामक नाटक का वर्णन नहीं है, केवल 36 ही नाटक सम्मिलित थे।

कालिदास ने नारी-पात्रों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया है, कहीं उनकी बाल्यावस्था का वर्णन किया है, कहीं युवावस्था का। परन्तु सर्वत्र उन्होंने नारी को सामाजिक मर्यादा में बाँधा है, इसी कारण उनहोंने प्रेम की पूर्णता विवाह में मानी है। प्रेम, तत्जन्य विभिन्न प्रकार की शारीरिक व मानसिक पीडा, उससे उत्पन्न होने वाली व्यक्तिगत व सामाजिक कठिनाईयाँ, नारी के साथ दुराचार का प्रयास, फिर नारी के सतीत्व की रक्षा, आदर्श चरित्र युवतियों का सृजन आदि शेक्सपीयर की विशेषताएँ हैं।

कालिदास एवं शेक्सपीयर के नाटकों में लगभग 1500 वर्षों तक का अन्तराल है लेकिन जब हम दोनों के साहित्य की परस्पर तुलना करते हैं तब यह लंबा समय कहीं भी बाधा को उत्पन्न नहीं करता है। दोनों ने नारी मर्यादा का पूर्णतः पालन किया है। जब नारी मर्यादा का उल्लंघन करती है तो परिणाम उसको ही भोगना पडता है। दोनों ने विवाह से पूर्ण नारी के अनैतिक संबंधों का घोर विरोध करते हुए प्रेम की पूर्णता विवाह में मानी है।

शकुन्तला, मिराण्डा, पेरडिटा और मेरिना प्रकृति की गोद में पोषित हुई सात्विकता, सरलता एवं सहजता इत्यादि गुणों से युक्त है। डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री ने शकुन्तला के बारे में लिखा है कि ''शकुन्तला वैसी ही पवित्र है जैसे अनाघ्रात कुसुम, जैसे नखों से अस्पृष्ट किसलय, जैसे अनाविद्ध रत्न, जैसे अनास्वादित मधु। जैसे पुण्यों का अखंडित फल।''[1] होराईस ने मिराण्डा के बारे में लिखा है कि 'वह शुद्धता, पवित्रता, दया एवं करुणा की देवी थी।'[2]

पुत्री, बहिन, सखी, प्रेमिका, पत्नी, माँ आदि नारी के विविध रूप है। दोनों नाटककारों के स्त्री - चरित्र अपने आप में अद्धितीय है, त्याग की अद्‌भुत मिसाल है। पुत्री के रूप में शकुन्तला कण्व श्रषि की आज्ञा का पालन करती है। कार्डेलिया के पिता उसे संपत्ति विहीन कर देते हैं परन्तु वह मौन धारण करती है। ''लेकिन बहनों के द्वारा पिता को घर से बाहर निकाल दिए जाने पर वह पिता की रक्षा केलिए आ जाती है एवं दोनों बहनों के दमन केलिए जुट जाती है बिना किसी स्वार्थ के।'[3]

बहिन-भाई एवं बहिन-बहिन के स्नेह का दोनों नाटककारों ने वर्णन किया है। मालविका अपने भाई माधवसेन को यज्ञसेन के बन्दीगृह से मुक्त हुआ सुनकर संतोष प्रकट करती है एवं कहती है -

''अरे इतना ही बहुत समझों कि उनके प्राण बच गए हैं।''[4] इसके अतिरिक्त धारिणी भी अपने निम्न जाति के भाई का पत्र देवालय में जाकर सुनती है। ओलीविया अपने भाई की मृत्यु के सात वर्षों के पश्चात् भी शोक से उभर नहीं पाएगी एवं निश्चय करती है कि वह अपने मुख को ढकाकर रखेगी। एड्रियाना एवं लुसिआना अपने मन के रहस्यों को एक-दूसरे के समक्ष प्रकट करती है। कार्डेलिया, रीगन एवं गॉनरिल तीनों के स्वभाव में अन्तर है। कार्डेलिया सरल, सादगी से युक्त है लेकिन रीगन एवं गॉनरिल में स्वार्थ कूट-फूट कर भरा है। शेक्सपीयर के नाटकों में एक ओर बहिनों की परस्पर मैत्री का वर्णन मिलता है दूसरी ओर स्वार्थ तथा ईर्ष्यालू स्वभाववालों का चित्रण भी है।

सखी प्रेम का सुंदर चित्रण दोनों के नाटकों में मिलता है। प्रियंवदा अनसूया एवं शकुन्तला इकट्ठे ही लिखती, पढती एवं घरेलू कार्यों को करती है। दुष्यन्त के अत्यधिक आग्रह करने पर वह यही कहती है कि 'मुझे अपनी सखियों से पूछलेने दीजिए।'[5] बकुलावलिका एवं मालविका तो तन-मन से एक है। रानी धारिणी बकुलावलिका को कारावास में डालने के वक्त में वह मालविका को आश्वासन देती है, ''मैं मसलने से और भी सुगन्धित होने वाली बकुलावलिका हूँ।''[6] हीरो एवं बिएट्रिस का स्नेह भी अद्भुत है। जब सब हीरो के चरित्र को संदेह की दृष्टि से देखते हैं तब मात्र बिएट्रिस ही इस आरोप विरोध करती है कि ''हीरो कभी भी चरित्रहीन नहीं हो सकती।''[7]

धारिणी, इरावती, औशीनरी, एड्रियाना, कैल्फुर्निया, पोर्शिया, मेरियाना, कैथरीना, डेसडिमोना, इमोजन, रानी कैथरीन, थाईसा, हर्मियोन आदि श्रेष्ठ पत्नियाँ हैं। औशीनरी पति केलिए 'प्रियानुप्रसादन' व्रत रखती है और पति की प्रसन्नता केलिए उन्होंने सर्वस्व त्याग कर दिया। उसने कहा कि ''आज से जिस स्त्री को भी आर्यपुत्र चाहेंगे और जो कोई भी आर्यपुत्र की 'समागमप्रणायिनी' बनना पसंद करेगी, उसके साथ मैं प्रेम का व्यवहार करूँगी।''[8] एड्रियाना पति द्वारा उपेक्षा मिलने पर वह दुःखी हो जाती और रोते रोते अपने प्राण समाप्त करना चाहती थी।

मालविका, उर्वशी, ओफिलीया, जुलिया, सिलिया, जूलियट, परडिटा, मिरान्डा पूर्ण रूप से अपने प्रेमी जन के प्रति समर्पित हैं।

कालिदास एवं शेक्सपीयर ने विवाह संस्कार एवं उसके कर्त्व्यों का भी वर्णन किया है उनके अनुसार विवाह नर नारी का कल्याण हेतु मिलन है, यह मिलन केवल शारीरिक अथवा हार्दिक नहीं

अपितु दोनों का अपूर्व सम्मिश्रण है। 'दहेज' का स्पष्ट उल्लेख दोनों ने अपने किसी ग्रंथ में नहीं किया है लेकिन कालिदास ने विवाह के समय विशिष्ट रूप से अलंकरण आदि वस्तुएँ प्रदान कराई है परन्तु शेक्स्पीयर ने नारियों को आर्थिक संपन्नता प्रदान कराई हैं।

कालिदास और शेक्स्पीयर दोनों ने अपने नारियों को शिक्षा प्रदान किया है। शकुन्तला कविता करना जानती थी उसका दुष्यन्त को लिखा हुआ पत्र काव्य में था। प्रसाधन कला अनसूया, प्रियंवदा दोनों जानती थी। मालविका नृत्य और शिल्प-शिक्षा को जानती थी। परिव्राजिका को संगीत और वैद्यशास्त्र का अच्छा ज्ञान था। मेरिना नृत्य, संगीत में निपुण होने के साथ सिलाई, कढाई में भी दक्ष थी। पेरडिटा इन गुणों के अतिरिक्त भोज्य सामग्री बनने में निपुण थी। बियांका को संगीत और काव्य में अच्छा ज्ञान था। रानी मार्गरेट सैनिक शिक्षा प्राप्त होनेवाली नारी है।

कालिदास और शेक्स्पीयर ने नारी सौंदर्य का वर्णन भी किया है। शकुन्तला के सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार किया है - 'उसके लाल ओष्ठ लता की कपोलों के समान शोभते हैं। दोनों भुजाएँ वृक्ष की कोमल शाखाओं के समान प्रतीत होती है।'[9] उर्वशी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि - ''देवांगना, मन्दमना, स्थूल तथा उन्नत स्तनोंवाली, स्थिर यौवना, दुबली देह वाली, हंसगमना, मृगलोचना हमारी प्रिय को देखा है।''[10] ओलीवया के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि ''परमात्मा के द्वारा निर्मित अद्‌भुत कृति है।''[11] हीरो के सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार है कि ''उसका सौंदर्य मई मास के प्रारंभ से लेकर दिसम्बर मास की बहार के समान है।''[12]

संक्षेप में कालिदास एवं शेक्स्पीयर के समय का लंबा अन्तराल होने के बावजूद भी इन दोनों के नारी - पात्र समान आदर्श परम्परा का पालन करते हुए समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है। साहित्यकार को किसी देश, काल, जाति एवं धर्म की सीमायें बाँध नहीं सकती है वह तो सर्वकालिक सार्वदेशिक एवं सार्वभौमिक होता है। यहीं बात कालिदास एवं शेक्स्पीयर पर पूर्ण रूप से लागू होती है।

<u>स्दर्भ</u>

---

[1] अभिज्ञानशाकुन्तलम् : डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री, पृ. (11-10)

[2] द टेम्पेस्टः होराईस होवार्ड, पृ. (1-11)

[3] किंग लियरः निचोलेस ब्रूके, पृ. (V-III)

[4] मालविकाग्निमित्रम्ः डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री, पृ. (V)

[5] महाकवि कालिदासः डॉ. रमाशंकर तिवारी, पृ. (200)

[6] मालविकाग्निमित्रम्ः डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री, पृ. (III)

[7] शेक्सपीयर् कम्पलीट वर्क्सः डब्ल्यू. जे. क्राईग, पृ. (135)

[8] विक्रमोर्वशीयम्ः पं. श्रीराम चन्द्र मिश्र, पृ. (III)

[9] अभिज्ञानशाकुन्तलम्ः डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री, पृ. (30)

[10] विक्रमोर्वशीयम्ः पं. श्रीराम चन्द्र मिश्र, पृ. (58)

[11] ट्वेल्फ्थ नाइटः पृ. (111)

[12] मच एबाउट नथिंगः पृ. (110)

आधार ग्रंथ

1. कालिदास एक अनुशीलन : श्री देवदत्त शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वारणासी.
2. कालिदास की कला और संस्कृति : डॉ. देवीदत्त शर्मा, साहित्य भण्डार, मेरठ, 1970.
3. कालिदास अण्ड शेक्सपीयर : मान सिन्हा मयाद्रा, मोटीलाल बनारसीदास.
4. शेक्सपीयर दी ट्रमाट्टिस्ट्ट : उनाफेर्मर, केन्नत कम्पनी, लण्डन.
5. शेक्सपीयरेर्स् हीरोईन्स्ः जेम्सोन अना, एर्नसट् निस्टर, लण्डन.